दान

प्रेम का उच्चतम रूप

अपने सभी काम प्रेम से करें।
1 कुरिन्थियों 16:14

यद्यपि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलता हूं, और प्रेम नहीं रखता, तौभी मैं बजता हुआ पीतल वा झनझनाती हुई झांझ बन गया हूं।

और यद्यपि मेरे पास भविष्यवाणी करने का उपहार है, और मैं सभी रहस्यों और सभी ज्ञान को समझता हूं; और यद्यपि मुझे पूरा विश्वास है, कि मैं पहाड़ों को हटा सकता हूं, और प्रेम नहीं रखता, तो मैं कुछ भी नहीं हूं।

और चाहे मैं अपनी सारी संपत्ति कंगालों को खिला दूं, और अपना शरीर जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तौभी मुझे कुछ लाभ नहीं।

प्रेम दीर्घकाल तक सहता है, और दयालु होता है; प्रेम ईर्ष्या नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, फूला नहीं समाता, अनुचित व्यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता, आसानी से क्रोधित नहीं होता, बुराई नहीं सोचता; अधर्म से नहीं, परन्तु सच्चाई से आनन्दित होते हो; सब कुछ सह लेता है, सब कुछ विश्वास करता है, सब कुछ आशा करता है, सब कुछ सह लेता है।

प्रेम कभी असफल नहीं होता: परन्तु चाहे भविष्यवाणियां हों, वे असफल होंगी; चाहे जीभें हों, वे समाप्त हो जाएंगी; चाहे ज्ञान हो, वह मिट जायेगा।

क्योंकि हम कुछ-कुछ जानते हैं, और कुछ-कुछ भविष्यवाणी करते हैं। परन्तु जब वह आ जाएगा जो पूर्ण है, तो जो आंशिक है वह दूर हो जाएगा। जब मैं बच्चा था, मैं बच्चे की तरह बोलता था, मैं बच्चे की तरह समझता था, मैं बच्चे की तरह सोचता था: लेकिन जब मैं आदमी बन गया, तो मैंने बचकानी बातें दूर कर दीं। फ़िलहाल हम शीशे के आर-पार देख रहे हैं, अँधेरा; लेकिन फिर आमने-सामने: अब मैं आंशिक रूप से जानता हूं; परन्तु तब मैं वैसा ही जानूंगा जैसा मैं जाना जाता हूं।

और अब विश्वास, आशा, प्रेम, ये तीनों विद्यमान हैं; लेकिन इनमें से सबसे बड़ा प्यार है।

1 कुरिन्थियों 13

सावधान रहो, विश्वास में दृढ़ रहो, पुरुषों की तरह छोड़ दो, मजबूत बनो। अपने सभी काम प्रेम से करें। **1 कुरिन्थियों 16:13-14**

इसलिये परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र और प्रिय, करूणा, कृपा, मन की दीनता, नम्रता, और सहनशीलता को धारण करो; यदि किसी को किसी से झगड़ा हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे को क्षमा करो: जैसे मसीह ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब वस्तुओं से बढ़कर प्रेम को, जो सिद्धता का बंधन है, बान्ध लो। और परमेश्वर की शांति तुम्हारे हृदय में राज करे, जिसके लिये तुम एक शरीर होकर बुलाए भी गए हो; और आभारी रहो.
कुलुस्सियों 3:12-15

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले। हे भाइयो, हम तुम्हारे लिये सदैव परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, जैसा कि उचित भी है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत ही बढ़ गया है, और तुम सब का एक दूसरे के प्रति प्रेम बहुत बढ़ गया है; ताकि हम आप परमेश्वर की कलीसियाओं में तुम्हारे सब उपद्रवों और क्लेशों में तुम्हारे धैर्य और विश्वास के कारण तुम पर घमण्ड करें:
2 थिस्सलुनीकियों 1:2-4

अब आज्ञा का अन्त शुद्ध मन, और अच्छे विवेक, और निष्कपट विश्वास से उत्पन्न होने वाला प्रेम है: **1 तीमुथियुस 1:5**

इस कारण हम परिश्रम भी करते हैं और निन्दा भी सहते हैं, क्योंकि हम जीवित परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, जो सब मनुष्यों का, और विशेष करके विश्वास करनेवालों का, उद्धारकर्ता है। ये चीज़ें आज्ञा देती हैं और सिखाती हैं। कोई तेरी जवानी का तिरस्कार न करे; परन्तु तू वचन में, बातचीत में, प्रेम में, आत्मा में, विश्वास में, पवित्रता में विश्वासियों का आदर्श बन। जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ना, उपदेश देना, उपदेश देना। **1 तीमुथियुस 4:10-13**

लेकिन एक बड़े घर में न केवल सोने और चांदी के, बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी बर्तन होते हैं; और कुछ आदर के लिये, और कुछ अनादर के लिये। इसलिये यदि कोई मनुष्य अपने आप को इन से शुद्ध कर ले, तो वह आदर का पात्र, पवित्र, स्वामी के उपयोग के योग्य, और हर अच्छे काम के लिए तैयार हो जाएगा। जवानी की अभिलाषाओं से भी भागो; परन्तु जो शुद्ध मन से प्रभु को पुकारते हैं, उनके साथ धर्म, विश्वास, प्रेम, मेल मिलाप का पालन करो। लेकिन मूर्खतापूर्ण और अशिक्षित प्रश्नों से बचें, यह जानते हुए कि वे लैंगिक संघर्ष करते हैं। **2 तीमुथियुस 2:20-23**

परन्तु सब बातों का अन्त निकट है; इसलिये सचेत रहो, और प्रार्थना करते रहो। और सब वस्तुओं से बढ़कर आपस में प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम बहुत से पापों को ढांप देता है। बिना किसी द्वेष के एक दूसरे का आतिथ्य सत्कार करें। **1 पतरस 4:7-9**

और इसके अलावा, सभी परिश्रम करके, अपने विश्वास में सद्गुण जोड़ें; और गुण ज्ञान के लिए; और ज्ञान को संयम; और धैर्य को संयमित करने के लिए; और धैर्य से भक्ति करो; और भक्ति पर भाईचारे की कृपा; और भाईचारे की दया प्रेम को। क्योंकि यदि ये बातें तुम में हों, और बहुतायत से हों, तो वे तुम्हें ऐसा बनाती हैं, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहिचान में न तो बांझ होओगे और न निष्फल होओगे। **2 पतरस 1:5-8**